दैनिक भास्कर
इंदौर • रविवार. 18 जनवरी, 2015. 6

घर पर इतने कैमरे लगा दिए लेकिन वारदात नहीं रुक रहीं

हालांकि छोटे शहरों में सुरक्षा उपकरणों का प्रयोग 100% बढ़ रहा

▪ धर्मेन्द्र सिंह भदौरिया/विनोद यादव/मुकेश सिन्हा . नई दिल्ली/मुंबई/पटना/इंदौर

छोटे शहरों में सिक्योरिटी उपकरणों का प्रयोग वार्षिक आधार पर 100 फीसदी और पूरे देश में 30 फीसदी की दर से बढ़ रहा है। आधुनिक सिस्टम सुरक्षा उपकरण आपको ई-मेल, फोन पर सूचना देने के साथ ही सायरन आदि बजा कर अलर्ट तो दे देते हैं, लेकिन वारदात नहीं रोक पाते हैं। अपराधी को पकड़वा पाने में अक्सर विफल होते हैं। इसकी मुख्य वजह हैं अच्छी क्वालिटी के उपकरण विशेष रूप से कैमरे का न होना, सुरक्षा उपकरणों के रखरखाव का अभाव और इंटरनेट की स्पीड का लगातार न मिल पाना। सुरक्षा उपकरणों में सबसे बड़ी चुनौती गुणवत्ता की है। भारत में सुरक्षा उपकरणों का उत्पादन नहीं होता है। 80 फीसदी उपकरण तो सिर्फ चीन से ही आते हैं। बाकी कोरिया, अमेरिका, जर्मनी आदि देशों से आयात होते हैं। अमेरिकी और जर्मन प्रोडक्ट महंगे होने से लोग चीनी विकल्पों की ओर रुख करते हैं, जिनकी क्वालिटी अक्सर खराब होती है। अच्छे सीसीटीवी कैमरे न होने के कारण व्यक्ति विशेष का चेहरा सही नहीं आ पाता है। वर्तमान में सिक्योरिटी सिस्टम का घरों में उपयोग महज पांच फीसदी है।

चीनी कैमरे जहां 2500 रु. में मिलते हैं तो श्री मेगा पिक्सल आईपी सीरीज कैमरे 50 हजार रुपये में उपलब्ध हैं। पुलिस रेडियो ट्रेनिंग स्कूल, इंदौर के डायरेक्टर वरुण कपूर ने बताया सुरक्षा उपकरणों ने सुरक्षा फोर्स की क्षमता को कई गुना बढ़ाया है। जांच में बहुत महत्वपूर्ण सुराग भी मिलते हैं लेकिन जोखिम भी कई गुना बढ़ा है। हमारे पास कई ऐसे केस आते हैं जिसमें कैमरे से व्यक्ति की पहचान ही नहीं हो पाती। यह पूरा सिस्टम इंटरनेट और बिजली से संचालित है।

शेष पेज | 6 पर

वादे-हकीकत में अंतर ▪ घटना होने के बाद ही शुरू हो पाती है कोई मुहिम। सालों से इनका प्रयोग कर रहे लोगों से भास्कर ने जानी हकीकत।

1 सिर्फ निगरानी में ही मिलता है फायदा

रसोई में काम करने वाली बाई फोन पर बात करती दिखी तो उसे तुरंत मोबाइल से सिर्फ काम करने का आदेश मिला गृहिणी और कारोबारी ज्योति गर्ग से। ज्योति ने घर, ऑफिस और फैक्ट्री में पांच वर्ष से डिजिटल वीडियो रिकॉर्डर लगा रखा है। करीब तीन लाख रु. खर्च भी किए। वे बताती हैं फायदा सिर्फ निगरानी रखने का है। लेकिन चोरी की घटनाएं रोकने में सिस्टम कारगर नहीं है।

2 तीन साल में सिर्फ एक चोरी पकड़ में आई

कंपनी संचालक हेमंत मेहतानी के घर, गली और फैक्ट्री तीन साल से कैमरे की जद में हैं। उनके मुताबिक कैमरे का मनोवैज्ञानिक फायदा ही ज्यादा है वास्तविक बहुत ही कम। कई बार चोरी होने के बावजूद चोर एक ही बार गिरफ्त में आ सका। चोरी होने के बाद कैमरा यह तो बता देता है कि आदमी है या औरत लेकिन सही पहचान नहीं होती। प्रभावी निगरानी तो गार्ड से ही होती है।

3 नेट स्पीड न मिलने से नहीं हो पाता प्रयोग

26 वर्षीय ब्यूटीशियन गुंजन दीक्षित अपने घर, दो सेलून और एकेडमी में क्या हो रहा है एक टच से ही अपने मोबाइल पर जान लेती हैं। वे बतातीं हैं कि आठ कैमरे और वीएमआई लगाने में उन्हें कुल 80 हजार रुपये का खर्च आया। लेकिन कई बार इंटरनेट की स्पीड न मिल पाने के कारण वे इसका प्रयोग नहीं कर पातीं हैं। रिकॉर्डिंग के बजाय सिर्फ ब्लैक स्क्रीन नजर आती है।

वर्तमान में सर्वाधिक प्रचलित सिक्योरिटी सिस्टम

▪ **सेंसर आधारित सुरक्षा सिस्टम :** घर के प्रमुख स्थानों पर सेंसर लगाते हैं। जो कंट्रोल पैनल से जुड़े रहते हैं। प्रोग्रामिंग के हिसाब से घटना होने पर फोन, मेल या एसएमएस तुरंत मिलेगा। **कीमत- 20 से 40 हजार रु.।**	**यह है कमी :** कई बार छोटे जानवर आने से भी अलर्ट बज जाता है। न फोटो दिखता है ना ही आवाज आती है। सिर्फ अलर्ट ही, वारदात नहीं रोकता।
▪ **वीडियो रिकॉर्डर सिस्टम :** घर में कैमरे लगा दिए जाते हैं। इमरजेंसी होने पर सिस्टम कंट्रोल पैनल से सीधे तीन फोटो खींच कर मेल कर देता है। मोबाइल पर लाइव देख सकते हैं। इसे डिजिटल वीडियो रिकॉर्डर, नेटवर्क वीडियो रिकॉर्डर सिस्टम कहते हैं। **कीमत- 4 कैमरों का सेट 16-28 हजार रु.।**	**यह है कमी :** अच्छी क्वालिटी न होने और कैमरे से दूरी के कारण वारदात करने वाले की सही तस्वीर नहीं दिखती। आवाज का प्रावधान नहीं। इंटरनेट स्पीड ना हो तो सिस्टम ठप।
▪ **बायोमैट्रिक्स सिस्टम :** अटेंडेंस सिस्टम, फेस रिकग्निशन सिस्टम से व्यक्ति विशेष की पहचान की जाती है। जिसमें उंगली के निशान, आंख और चेहरे के जरिये पहचान प्रमुख हैं। **कीमत- 15 से 35 हजार रु.।**	**यह है कमी :** सिर्फ व्यक्ति की ही पहचान हो सकती है, कार्य स्थल पर वह क्या कर रहा है दिखाई नहीं देता। कमर्शियल यूज में ही उपयोगी।

जैकेट का शेष

घर पर इतने...

ऐसे में इसके हैक होने की स्थिति में आपके पर्सनल वीडियों या सीक्रेट बिजनेस को पूरी दुनिया देखती है। कई बार आपका कारोबारी सिस्टम ही ठप होने का खतरा हो जाता है। वहीं बिजली न होने की स्थिति में तो यह ठप ही हो जाता है।

अनेक्सी टेक्नॉलाजीज़ के सीईओ गोविंद अग्रवाल के मुताबिक देश में सर्वाधिक 80 फीसदी उपयोग व्यावसायिक और कमर्शियल क्षेत्रों में हो रहा है, इनमें भी ज्वैलर्स और कैश ट्रांजेक्शन वाले व्यापारों में इनका उपयोग 100 फीसदी है। सरकारी इमारतों, सार्वजनिक स्थलों और रहवासी क्षेत्रों में 15 फीसदी और घरों में अभी भी इसका उपयोग महज पांच फीसदी है। छोटे शहरों से डिमांड 100 फीसदी की आ रही है।

इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया के सलाहकार रक्षित टंडन कहते हैं कि सिक्योरिटी डिवाइसेज़ की सुरक्षा रखना और जानना ही सबसे आवश्यक है। हमारे पास कई बार ऐसे केस आए जिसमें मॉल में चोरी या वारदात में प्रयुक्त हुई गाड़ी तो दिखी लेकिन झूम करने के बाद भी नंबर प्लेट नहीं दिखाई दी। हालांकि अब अच्छी क्वालिटी के कैमरे बाजार में मिल रहे हैं लेकिन इनकी कीमतें घटने पर ही आम मध्यमवर्गीय परिवारों में इसका प्रयोग बढ़ेगा।

इफसेक इंडिया के अनुसार 30 से 35 फीसदी की वार्षिक दर से देश में बाजार बढ़ रहा है। हाउसलाइन और डिफेंस को छोड़कर 7 से 7.5 हजार करोड़ का बाजार है। उद्योग चैंबर एसोचैम के मुताबिक देश में सिर्फ क्लोज सर्किट टेलीविजन कैमरे (सीसीटीवी) का बाजार वर्ष 2015 में 2200 करोड़ रुपये हो जाएगा। जाइकॉम के बिजनेस हेड मनोज खाडिकर ने बताया कि ऐसा नहीं है कि इससे कोई फायदा हीनहीं हुआ है। उदाहरण के तौर पर संजय गांधी नेशनल पार्क से सटी एक सोसायटी से कुत्ते व बिल्लियों के रहस्यमय ढंग से गायब होने का खुलासा तब हुआ, जब सीसीटीवी कैमरे में तेंदुए कीसोसायटी में घुसने की तस्वीर कैद पटना में 19 नवंबर 2 रिटायर्ड एडीएम की बेटी से ने पिस्टल की नोक पर नकदी और सोने की चेन सीसीटीवी फुटेज में तस्वीर के कारण अपराधी पंकज पुलिस पहुंच गयी। छत्तीस राजधानी रायपुर में एक ज्यादा दुकानों, दफ्तर औ में सुरक्षा उपकरण हैं। वही इसकों लेकर उदासीनता है।